

प्रस्तावना ।

एको मे आभातात्मा सुन्वमसुन्त भनो झान दृष्टि स्वभावो । नात्प्यू किंचिविनं मे नसुपन करण भ्रातृ भागो सुत्तादि ॥ कर्मोद्भूतं समस्तं चपल्मसुन्तदं तत्र मोहो सुपा मे । पर्यालोच्येति जीवभ्वहिनमविनयं मुक्ति मार्ग थयत्वम् ॥४१६ ॥

श्रीजिसिताति आवार्य वहते हैं. "रे बीव ! तू ऐसा विन्तवन वह कि में एक हूं, अविनासी आत्मा हूं, मुखदुसको आप ही भेगते बात हूं तथा जान दर्शन न्यावक धरी हूं। शारीर, धन, इन्द्री, भई, सी, जगत, मुख आदि कोई भी अन्य जीव मेरी नहीं है: क्योंकिये मई जगदुरे पहुंचे बजीने उत्तव, पंचव (हरामंगुर) और अन्यते दुसदाई है। इनमें मेर बाता मेरी मुस्तित है और तृ अपने बस्त्यान वरने से से मेरी नामीका अन्नय कर।"

प्रिय मत्य मुस्कुलते ! मेल काने ही कानावा सुद्ध निरंतन अमन समाव है। मेल का काना कामन कार्यन मुख्य का है। मेल का कार्यन कार्यन मुख्य का है। मेल निरंत्यकार नामें कि मानावार माना ही मानावार है। हैने निरंप्यकार नामें कि मानावार माना ही मानावार है। निरंप्यकार कार्या कर्ने हैं।

मुनिक्ये प्रथम न प्रणायम है और न हरबंग है । मुक्तिका मध्य प्रथम कि किम प्रकार राज्योगकी पुक्त कीन्यान समिति कर्रक हुंचनमा कहान स्थान प्रणावित सम्बद्ध मुक्ति अनुस्क म्ह द्वारा संगटित पदार्थ मालिहाके ज्ञानका अनुमन न होनेसे वे आर्त

आत्मानुमबके रासिक मुमुसुननीके हितार्थ ही हमने अपने उप तुच्छ अनुभवके द्वारा जो हमको श्रीसमयसारनी, श्रीपरमात्मप्रकारणे तथा अनुभवप्रकारानी आदि अच्यात्मिक क्रन्योंके बॉबनेसे हुआ है। नैनमित्रके अन्दर ता० २१ मई सन् १९०९ के अंकसे छेता०!!

भावनाको पूरी नहीं कर सक्ते हैं।

अन्दूबर १९११ के अकतक अनुभवानन्द् नामके हेलों की प्रकारि ।
किया था। अब हमारे पास महतिस माहयों में पिए। हुई कि इन हैर्सको पुस्तकातार निकाला माप, इसारे यह पुस्तक प्रपाद की गई है। ।
पाटकींकी उपित है कि इसके हएएक हेसको एक्क्वीबैटकर पुन. पुनः कई बार बाँची जब बांचते र उपयोग थिर
होगा तब परमञ्जूमसरस्का स्वार आयेगा । यदि शीमदासे रण
पुस्तकको पद्मानायमा तो आनन्दका विद्या कित होगा।
यदि प्रमाद व अलानदात इन हेसकी संगठनमें कीई अहादिय

रह गई हों तो बिद्वाजन हमें समा करते हुए मुघार कर पहें कर हमें सूचना दें ताकि द्वितीयान्निमें मुचार दी मोय।
पूक मेंशोभनमें भी कुछ अद्युद्धया रह गई थीं, उनका सुद्धानुनि
पत्र इस पुस्तक हो, हमें ही हमा दिया गया है, गठकमण, पहरें
उसके अनुमान अद्युद्धिया मुघार होनें किर पुन्तकरों पढ़ना शुद्ध कों
मुख्तान शहर
ता॰ ८-१-१९१६ ई॰
}

विषय सूची।

4111	
'• विषय.	
अगम दुर्ग अद्भुत चोरी	ष्ष्ट संख्या
भोजन-सत्कार	₹ ₹
^{त्या—शमन} मेरी महिमा	۶ س
युद्धमें गृहत्य-मुख विवाह-रस	₹•
दरालसाणिक फर्म	१२ १६
आगारी साष्ट्र बन-विहार	१९ २२
आत्मीक रामायण लबस्तु—बाटिका	२३
सन्यक्रीकी उन्मर	२५ १९
अध्यात्मीक अनुस्य —	₹o ₹3
गुफार्ने विश्रास	₹ ₹ ₹ ७
मिच्यात्व गुणस्थानीकी उद्दाः सम्बद्धः गुणस्थानीको बद्धाः	₹ <i>ę</i>
र बैडेन	84

भिश्रमुणशानमा दिगान	४९
असिन्तपुणस्थानी हो। तित्र ति । वर्षात्र	41
भारता मेश महत्रमें प्रोप्त	9.8
यमनस्यभैः है। भारानामा	9.9
भागमनविद्यतको माकना	19
सम्दरमानी पात्रन	(9
भविद्वानिकाण स्वयम	
मुख्यार राजवधी विजय	48
उपरास्ता र ही कर्ता रूप	44
र्म प्रमें में - मर्नेन हा दिलाम	4<
गत्म र आस्त्रेत्रम्	(%.
भवेत रेक्स	5
दिन्द -दिना -मान्य	υĘ
मेर्ग स्टान्ट्स	4
£1 27	40 0
with a suppress	19 %
नामको अस्त	< ?
werk-aver	<3
Man & Anima	C#
المحمد الما الما	<*
	C *
न द ने दू न नामा ह	< e
Alexand & t. C.	• /

इन्द्रियमार्गणाकी खोडी राक्ति	९३
कायमार्गणामें आकुल्ता	<i>६६</i>
में अक्सय हूं	९८
योगमार्गणार्ने डगमगाहट	{∘∘
देवमार्गणाकी आकुळवा	१०२
क्याचाँकी वंचक्या	१०३
ज्ञानमार्गजाकी महस्त्रता	१०६
संयममार्गणामें स्वरूप विकाश	१०८
द्शंन मार्गगाका अवलेकन	११०
हेस्या मार्गणामें भवत्रमण	११३
मत्यामव विकल्प न करना	११६
सन्यक मार्गणाकी झलक	117
संजी असंजीकी कलना	१२०
अहारक मार्गमान्य विकल	१२२
पंत्र मर्जेनी स्य	१२४
अनुभव मुख ही मार है.	१२६
গুভাগুভ पत्र ।	
या पंक्ति अग्रद	शद

स्ति अशुद्ध '१ वन '१ वन्य ४ मार्न '१ मेहाब

शद मारी ममय मनि मेहाब



(6) **{ 8** शात ٤₹ शांत नाग 93 जगा दृशे ٤ ۽ द्य सम्पद्धा 1 सन्यक्ता ĒĖĨ 9 द्यष्टि सन्यक्टर्धा ₹ बेसुइ सम्पक्टांटि १५ वेसुष को शांवकर देवी को शांवकर देवी है है और अपने प्र- और अपने प्रत्येक त्येक सम्मेलनम् सम्मेलनम् इस शांतकर देती है और जापी आत्नाको व्यने प्रत्येक सम्बेलन में इस नापी अत्मको ÷. को ٩ की (00 ی ع <000 कायों ş धेर कायों < घारे मन्यक्ष्ष्टि ٤ परमन्यक्<u>टा</u>ष्टे पहच नने मनन इसने रेट रेट्या इ.स. इन्द्रस्य का ह्याच्या सङ् 南京等

		(<)			
१०७	१ ४	ईद्विरूपवर्गधारा १.	रे 💆 द्विरूपवर्गधारा		
100	१७	प्रतिमा समान	प्रति भासमान		
111	Ę	उपयोगका	उपयोगकी		
8 \$ 8	\$ 8	कर्मबंद	कर्मवध		
११८	<	कारणलञ्चिद्वारा	करणङ्गिद्धाराः		
१२३	२०	भीवका	जीवको		
१२४	4.8	आहरको	आहारको		
१२४	10	શ્રમ્ પી	स्वरूपी		
१२६	৬	काष्ठा	काष्ठ		
१२६ -	13 .	ब्यवहारक	ब्यवहारिक ः		
१२८	Ę	झळकाती	झलकाता		

ईन करास्य

श्रीवीवरागाय नमः।

अनुभवानन्द

अगम दुर्ग ।

いいっちゃんりょういん

({ })

र्मिह पदकी गुप्त राक्ति अपने अनुमनमें आ नाए, क्षणमें ही स^{म्न} पर्को उन्मुलकर निर्मय हो। अपनी शक्तिकी अपनेमें मान्यता हो नेमे निराकुछ रहे, क्षद्र संगतिमें न पड़े। अपनी मानि सुता

(2)

नाशी है। वे मर्तिक, मैं अमृतीक हैं। वे दुलस्वभाव, मैं सुरासक है। वे उपाधिकप, मैं निरुपाधि है। वे मफलक, मैं नि करूक हूँ। परार्थान, मैं स्वार्थान हूं। उनका मेरा नगभी मेलनहीं। को उन्हें संगति करे वह मदोध हो । यो मेरी मगति करे वह निर्देशि हैं। मेरी सम्पत्ति अविनाशी, उनकी विभृति विनाशीक । मैं अपने नि^{त्र} आत्मानुभवकी भावनामे परमकृष्य हूं । मुझमें जन्म, जरा रोग, व्यापं

नहीं, कर्म रिष् मेरा मुद्द देखते नहीं; मेने अपनी अनुमृतिकी भूनि

और अपनी मानी ही दावदाई है। मैं ही प्रिद्ध निरंजन परमात्मा हूँ मुजमे अन्य राग, द्वेप, कोघ, मान, माया खोभादि भावकर्म, झान^{ुइस्} आदि द्रव्यकर्म, शरीगदिनोक्तमे-सर्व अन्य ही हैं।वेक्षणिक, मैं भी

में ही अपना अगम दुर्ग बनाया है, उमीमें निवास करता आरं विज्ञुमूर्ति सर्वाके माथ मनमे ब्रीडा कर रहा ह। मुझे मोजन, बठ आयुरण, मुगय केर, तल, कुळेल, दाय्या, आमनरी आवश्यक नहीं। अपना सुवासपृह, अपना भोजन, अपनी निर्मेट प्रदेशायदी.

अराना वस्त्र, अराना ब्रह्मरूप हीतः, अराना शामागा, भपना हान-**अरानी** मृगा अपने नन्मयन अपन ^२प तपन भारम-क्रियों, भारत कर करेंट अवर्थ क्षरण प्रत्य प्रथम प्रथम प्रथम

क्षेत्र याः चित्रमृति प्रशासन्तर विश्व यस्त्राच ४१ । मनत्वप्रायक

आरम निरायण्यम व्यव अयम बचन है यह समाप्री मेरे व

हाहै। मेरे दुर्गमें अन्य किसी मेरे विरुद्ध पत्तका प्रवेश नही। मैं अपनी क्षाक्रित शाकिका आप स्वामी हूं। में सबको देखता हूं, परन्तु मुझे कि अहुँद नहीं देखता । मैं किसीके पास जाता नहीं, परन्तु सब मेरे निर्मल के आस्मदर्गणमें (जो मेरे ही अनुपम शाव्या महल्में लगा है) आपसे आप अपना स्पप्त समय र की परिणतियों को लिये आ आ कर मुझे अपना स्पप्त हिता रहे हैं। मुझसे अन्य जन परस्पर एक दूसरेको रागसे शहण करते हैं, परन्तु में अपनी चिद्वुम्तिस्प पटरानीकें सिवाय किसीको श्रहणकर पर-पद-रत नहीं होता। निस सुखको पानेके लिए मुझसे अन्य जन तरसते

अद्भुत चोरी।

हैं, उस आनन्दको पाकर में अनुभवानन्द रूप रहता हूं।

्२

आत में, जो अनादि कालम मोह, मदिराके तीव नरोम बेहोरा हो रहा था, किञ्चित् मदकी हीनतासे जो सबेत होता हूं तो अपने ज्ञानामंद स्वरूप अरूप अविनाशी अर्लंड विलेकमून चेतन्य प्रभुक्ते अपनी दृष्टि मम्मुख न देख विहल होता हूं और उस बीतराग स्वस्वभाव—गुप्त स्वामीम गग प्रगट करनेको दीड़ता हूं; जिम नगत् कृत्रिम रूपकी प्रत्यक्ष चमकको उमकमें जाता हूं. वह ही जलक अनमें बाल्येनको प क्षेत्रिन हो अत्रिक अधिक

अपने श्रेष्ठ इष्ट ईश्वरमे मिलेनको लिक्कप्र-तृष्यमे बावित होता हूं। अपने परम केहीकी खोलमें पत्त्रयमान होते होते में एक क्षीतल मस्यक्त कृतकी छायामे आकर विश्वाम हेला हु और बहु



परिणितिसे उद्योग करता हुआ सर्व विभृति बुराकर अपने विकोटके भीतर गुप्त भंडारमें रखता हूं और उसको भीगकर सुखी होता हूं। यद्यपि में मूपकवत् व्यवहार करता हूं, पर में कभी अपने

अवीर्ध्यमतको संडित नहीं करता। यदाप में स्वात्मधन चुराकर स्रता हूं, तथापि जहांसे स्वता हूं वहां वह धन वैसाका वैसा ही विना एक परमाणुको कन किये रहता है। यह कुछ मेरी चोरीमें अद्भुत शक्ति हैं कि, निसको मेरे स्वामी भट्टे प्रकार जानते हैं और यह उनकी ही आज़ा है कि ऐसी चोरी करो, तुम कमी अपराधी नहीं हो।

आन इस वृक्षकी शीवल विवेकक्षी छायामें बैटकर और अपने इष्ट परमेष्टी निरंजन परव्रअरूप स्वयभुका अनुभवकर सर्व बासनामे रहित अनुपम अनुभवानन्दको प्राप्त होता हूँ ।

भोजन-सत्कार ।

. चतन्य अभिराम गुणधान आत्मारामका विश्रासम्बर पद अटल,

(₹

अभय, अनल, अदिनाशी और अमयोद्रूष्ट है। जिस पद्की दीमिमन किरणावली भववादीतमको अणमायमे विल्या कर देती हैं। जिस पद्के मामाल पर्यविम्य पराभाम लिख्य हो उहारे नहीं, जिस पर्यवे भरी, जिस्साम विहारी अविकारी सरकारी रहका अनवस्था तक भी निल्या-सम्बद्धी चाराने नहीं तैसे राके अभिन्यी, भव क्रममे एटामी अपनी मोहरामी करणेने हुल्यों आज अन्या नुम्ही प्रवेशकर भेदज्ञान खडग छे चिरकाल प्रवेशित रिपुदलको संहार कर-नेके अर्थ उद्यमी हुए हैं।

इस खडगकी दीति पाते ही शत्रुओं के दल कहां निला गए-सा कुछ पता नहीं । वे रहें या जाए उनकी ओरसे भयका विध्यंसकर निर्भय हो अनुभव रसका प्रेमी अपनी निर्मल अनुभृति देवीका दर्शन-

कर उन्मत्त हो उसके अद्भुत रूप रसका पान करते २ ऐसा एका-सन हो गया है मानो एक स्फटिकमणिकी पुरुपाकार मूर्ति ही है। ऐसी स्फटिकमणिकी पुरुपाकार मूर्तिमें अपनी निर्मेखताके कारण

जो जो पदार्थ प्रतिभाषित होते हैं, वे स**र** स्वय अपना जैसाका तमा रूप देख अपनी पर्यायके अभिमानमें अपने र स्यव्हें सरक कर कभी भी इस मुर्तिमें आते नहीं और न यह उन्मत्त पुरुष दौढकर उनकी तरफ नाता है। इस अंतरग भूमिमें रमनेवाले पुरुषका स्वमानका अभिमान इस पुरुषको सर्व अन्योकी श्रीतिसे तुडाकर एकाकी कर देता हैं: तथापि इस मुखको सुघ नहीं. यह किसीकी भी

परवाह न कर अपने अनुभव रसके स्वादमें महा है । यद्यपि यह उन्मत्त है संथापि इसकी अनुभूति देशी सदा साव-धान है । इसके शत्रु, जो इसकी खड़गकी चमकसे हुस है। गए थे, रह रहकर इसके। दबानेके लिये आते हैं। उनका मुख देखते ही अनमति देवी इसे चिताती है। यह उसी क्षण भेद-ज्ञान-असिको चम-

काता है । वे दुस्मन फिर गुप्त हो जाते हैं । इस प्रकारकी उन्मत्तता उन्मत्त पुरुषको कैमा बना देती है, यह

े वह परुप ही जाने या उसका निज निर्मल रूप जाने। इस ज्ञानमें



बरमें प्रवेश करता है। शांत, मिष्ट, निर्मेल स्वरस पूर्ण, स्वानुभवकी वैरात्य पतन द्वारा प्रेरी हुई, कल्लोलें जब उस पुरुषके तनको स्पत्रित करती हैं और अपनी शांतता उसके प्रदेशोंके अन्दर प्रदान करती है तत्र उस पुरुपको जो भवातापकी शाततासे निराकुल्ला श्राप्त होती है उसको वही जानता है या ज्ञानानन्दी मिद्ध परमात्मा भानते हैं। अपने निर्मेख विनेत्रके चुल्लुओंसे शुद्ध स्वरस-जब छैकर जब अपने स्वरूपाचल मुखके भीतर क्षेपण करता है तब वह पुरुष स्पाको दामनकर अनुपम जलकी अपूर्व मिष्टताका स्वाद हेले सुनि गहित होता है। पीने पीते अधाता नहीं, पीते पीते कभी पेट फलाता नहीं, ऐमे जलका पानकर प्रकुाहित बदन व्यक्ति अपनी इाक्तिकी व्यक्ताकी शङ्क पाकर सचेत होता है और उस सरी-बरमें ही निरन्तर अवगाह करने स संकल्प करता है। अपने तनहों हुलमायमान देख और मव-वनमें मटकते हुए अपने पूर्व माथियों में अपनेको श्रेष्ठ मान ज्यों ही वह अपनेको पर मातमा, परम्रदा अविकारी, मोल-ग्राम-विहारी, अतुल पराक्रमधारी अवलोकन करता है कि यशायक उस मानके अभिमानमें उन्मर हो सर्व जगनको भूग देश्य भावको गया अद्वेत हो, निकलान-जनमें विग्नित रह स्थरम मरेखरके भीतर उत्मन वेष्टा करने व्यात है। मोरे मरेप्पर हे अपना नृत्य स्थान बना नामना है। ऐसे नृत्यका करेंग, विदार मन्यल नाण रेग, स्वपटमें बमेंगा, नः . जब मृत्य करने २ रकता है अपने तत्रक्षे पहिले मनयमे अधित



माह्या । (५)

आन में कर्तापनेके कटुक, विरुद्ध और नि.सार मन-विकासो त्यागकर निम ज्ञाता—ह्या सन्मावमें बख्डोड करानेके लिये उपत हो गया हूं। मेरा बनाया मन-विकार मुने ही विप-आहार सा हो चुका है। निस विकारने मुने परार्थान वभागें डाल्य और मेरी सर्व-बताका आपात किया उस शतुकर, प्रपंचभारी व्यवहारीसे मुने क्या प्रयोजन ! में चैतन्य-सस्का चैतन्यम् एट हूं। मेरा उपादान और निमित्त कारण एक ही है। मुने बिलानमें भरे किसी परामाश्चे अवहारिक माजसे मतलव नहीं। में कभी किसीनो

मताना नहीं । में कभी किसीको स्थितका नहीं । में अपने स्टार्सन्तान नहीं । में अपने स्टार्सन्तान समें अधिपालित रह सदा निन रसका हो पान करता हूं । मुते केश, मान, माया, लोग और उनके पिता राग, हेय तथा महापिता मोर्सें कुछ भी सम्पन्न नहीं । में वार्तन्तर हूं, वे अद्वास्तर हैं । में वार्त्स्य हूं, वे अद्वास्तर हैं । में वार्त्स्य हूं, वे अद्वास्तर हैं । में वार्त्स्य हैं। में वार्त्स्य हैं। में प्राप्ति हैं। में प्राप्ति हैं। में प्राप्ति हैं, वे अरसाश्चान हैं। में निवंध हूं, वे अरसाश्चान करीं, मार्सें में प्राप्ति कर करीं, नहीं में क्षेत्र । में में क्षेत्र नहीं, मार्सें मही में उनका करीं, नहीं करों में में निवंध हात्र ही नहीं। में

[•] अदिभाग परिच्छेदरूपगुत्र,

शुद्ध आहार-भोजी, अपनी शुद्ध परणतिका निरंतर खोजी हूं। मुझे भेरे ज्ञान-साम्राज्यका प्रवन्थ है, निस प्रवन्थमें अनुरक्त में नगत्के प्रपंचलप प्रवंधते असन्वन्ध हूं। मेरा ज्ञान-साम्राज्य मेरी ही निर-न्तर सावधानी और परम पुरुषिक बर्ट्स अटल है । यद्यपि में त्रिलोकालोकमें न्यापक हूं, परन्तु सदा ही निज थलको न तजकर अन्यापकरूप हूं। यद्यपि में इन्द्रिय—प्रामीकी रचनासे शून्य हूं, तथापि अपने अर्जान्द्रिय गुण त्रामका धाम होकर अशून्य रूप हूं; यद्यपि में निज परिणाम-कर्मके करनेसे कर्ता हूं, तथापि परकर्तृस्वके अभावसे सदा अकर्ता हूं । यद्यपि में निज परिणति रमनके स्वादका भोका हूं, तथापि परपदार्थका स्वाद न टेकर सदा अभोका हं। यद्यपि में परवस्तुओंकी प्रवृत्तिकी इच्छासे रहित सदा कृतकृत्य हूं, तथापि निनात्मीक स्वस्वमयरूप प्रवृत्तिमें प्रवर्तन करता हुआ सदा जक़तकृत्व हुं । यदापि में अपने आत्मीक द्रव्यका धारी अपने द्रव्यका सदा ज्योंकी त्यों रखकर नित्यरूप हूं, तथापि केवलीगम्य पर्गुणी हानि-वृद्धिरूप समुद्र-क्लोलबत् अगुरुलबुगुण परिणमनके कारण नित्य पर्य्याय द्वारा व्ययोत्पादको सहन करता हुआ अथवा नित्य अपनी अवस्थाको बदलनेवाले ज्ञेय पदार्थोके मेरे निर्मल ज्ञान-दर्पणमें समय २ परिवर्तन होते हुए ज्ञेयाकारोंकी अनित्य स्थितिके झलक-नेके कारण उस सलकनको धारण करता हुआ अनित्यरूप हूं। यद्यपि मैं केवलज्ञान-तनका धारी होकर अपने जाति स्वभावधारी केवल्ज्ञानियोंसे प्रत्यक्ष और सम्यन्ज्ञानियोंने परोक्तरूपसे दर्शन योग्य हु, तथापि निजानुभवर्गहेत उद्मम्य अज्ञानियों द्वारा सदा ही अदृद्यहूप 🔩 साम्य प्रचारी, मुख्यारी, मेरे ही अनुमन्दर्ध अपूर्व महिमा है। पुमे जो कोई विभाव भार्चोका और पदल्योंका कर्ता कहे वह सर्य अज्ञानी और अनुमम-रसरहित, बिरसका स्वादी, मोह व्यापिन पीडित परमानी है। निन्होंने आत्मकान छ्याया है और स्वामें

सगुगरूपी सुगंधित पुष्पोंको उगाया है वे आत्म-मोही मुग्ने कभी भी परका कर्ता कहनेके नहीं । में आज अपने स्वतंत्र बलके अभिपारमें उन्मत हो अपने आत्म-चनके मीतर झीड़ा करता हुआ स्वात्मगुण पुणोंकी सुगंबको लेता हुआ और निन परिणतिरूपी अर्द्धाद्विनीके साप सैर करता हुआ परआनन्दांसे अनीत अनुभवानन्दका स्वाद छेता हूँ। युद्धमें गृहस्य-सुस्त । निम रात्रुने अपने तीन पराज्यमें तीन छोकके संसारियोंके नीतकर अपना विजयका देवा बजाया है और नो अपने बिछोक्त-विनरं अभिमानरी मंदिरा पीकर उन्मत्त हो युद्ध-स्थलेंने आकर मडा हो भाना पेट फुटा रहा है- ऐसे शुपुको गीतनेके छिये आन में अपगतिन भेरतानस पनुष हायमें देशर खड़ा हो गया है। में बनवरी देशके समने किमीकी भी नाकत नहीं है कि जो दिक महे । मेरे मेटलान बनुत्यमे निरुत्य हुआ बीतराग मावरा बाण



(88)

गया, परन्तु ज्यों ही मैं अरा दम छेता हूं कि वह निर्क्रिक फिर सामने ताकता है। सन है, मैं पंचम गुणस्थानके रेनिमेंटका सिपाई हं । मेरे बाणोंमें उतना बल नहीं नितना श्रेणी-आख्द लेफ्टिनेन्टॉर्ने भागोंमें होता है, परन्तु मैं अब आलस्य करनेका नहीं, मैं तो इसकी बारवार बाण मारे ही जाऊंगा । मेरा यह अम्यास ही मेरी उन्नति करेगा और मैं कुछ कालके मीतर अवस्य श्रेणी आरूड हो तीत्र नाण चला इस राष्ट्रको मार मारकर निर्वत कर दंगा और बारहरें दर्नेपर पहुंचते ही इसको ऐसी अधमरी हालतमें कर दूंगा कि यह निर्वेख आंखोंसे मेरी ओर देराता रहे, परन्तु अपना सारा अभिमान और अपना सारा बन मूछ नाए । में नहां चौदहवें दर्नेने पहेचा और अपने अनंतगुणरूप सेनाका स्वतंत्र कमान्डर-इन-पीर (सेनापति) हुआ कि इचर इस शतुका भी प्राणान्त हुआ। मै जानग हं कि यह वैकियक रूप घारी है, नाना रूप होकर नाना नीवेंकी सताता है। इसकी नो अनादि अनंत शक्ति है उसको यह प्रयोग वो करेहीमा । करे, निनके दुर्मान्य हैं उन्हींपर इसका आवसण होगा। में तो समन्न गया हूं। में तो इसकी नस नससे जानकार होगया हूं। मेग इमका मुकाक्या ता थोड़े ही दिनके लिये है। मुझे निश्चय है कि में रोम एक दिन मारकर गिरा दूंगा और तब यह अनंत काल्में भी मेग मुशबना करनेसे लडा नहीं हो सका। ु मुप्ते अब भी मानन्द्र है. मेग कुछ भी विगाद यह आश्रव कमबरी अयु नहीं कर मका । यदापि में इस शतुसे युद्ध कर रहा

• ६र्माच बरामाहे आध्वती प्रदेशका है।



विवाह-रस् ।

(७)

परमामृतके प्रवाहसे परिपूर्ण, स्कटिक समान निर्मेल, खच्छन चिज्ज्योति विलासी, अविनाशी, अत्यानन्द्रधामप्रशासी, कर्मराहुप्रमन रहित, विभावमेचाडम्बर्गिरहित, स्वभावपरिणमनविद्यासाहित ज्ञान-चद्रमा आन मेरे स्वच्छ हृदयहूप आकारामें उदयको प्राप्त हु^{क्र} है। मेरे अद्भुत चंदकी चांदनीके सामने निधर देखता है पीतल पीतत्वही विदित होता है। कहां गए वे राग और द्वेप, जिनके व-शमें पड़ा हुआ मैं किसीको शुभ और किसीको अशुभ देखता था। धन्य है आजका समय ! जिन दुष्टोंने मुद्रे कभी पापी और कभी पुण्यात्मा कहलाया और मुग्ने अनादि काल्से अत्यन्त दुःस दिवे उन्होंकी सुरत आन में नहीं देख पाता हूं। जो में बहुत ध्यानमे देखता हूं तो में अपने चंद्रमासे भिन्न अवेतन अवस्थामें पड़े हुए . और म्पर्शे, रम, गंघ, बर्णको छिये हुए एक पुद्रस्के समृह मात्रसे देखता है. जिस समूहका स्यूडमें स्थूल सुमेह पर्वत सदश टुकड़ा अथवा मुक्तमं सूक्तम परमाणु समान अहा मेरे चद्रमाके न्वभावसे स वंधा भिन्न है। जिस पट्टल समृहके किसी अहत्य विभागकों में अ पनेही अज्ञानमें पुण्य और पापक नामसे पुकारना था, वहीं विभाग अ.न.भेरे ज्ञान-चद्रमांके निमेल प्रकाशोंमें एक नामसे और एक रू पमे प्रतिभाषित हाता है। मेरे चडमाज्ञ विमान उज्ज्वल, निर्वाप, भीर विस्मृतिमयी है । उसकी कोई भी पुहुल-समृहका विभाग महीन







कर, श्रीपरमात्म देकम दर्शन प्राप्तका आक्हादित हे। गया है, प्र निमके तेमके सन्मुख अनंत कोटि मूर्त्य भी तिनिसच्छल मामने हैं। निमक्षी शांत प्योतिके सामने अनंत कोटि चन्द्र भी नक्षप्रकर् मंदेः

कान्ति प्रतिमापित होते हैं, निसम्री निर्मेटता और शुद्धताईके समक्ष म्फटिकमणि, मल्टरहित नल और सर्वार्थसिद्ध विमानवामी अहमिद्रीके शुक्त हेदपायुक्त परिणाम भी सम्मिजित मालूम होने हैं। ऐसे शांत, मनोज्ञ, परमीत्कृष्ट प्रमुक्ते दर्शन प्राप्तकर आज यह संतम हो गया है। दिगम्बर नैन मुद्रा उत्तमशपादि दशान्त्राण-पर्मरूप आमरणीसे मुरोतियत, रक्षत्रय जदिन एकाहार झानक्ष्य मुहुरसे रिहानित, शिव-रमगीरमणके रागरूप रक मुल-अन्धमे उद्यमित, ज्ञान दर्शननिमेष्ठ 🕽 चनुर्जीमे दीनिमान् द्वाद्व शेतान्तर मुदारत ही मध्यीत हो रही है। जिम मुद्राका मोही यह नेतन्य मृति अभेर विन्तामें पढ ममुद्र-क्छोज्जन् आचाण कर रहा है । इसका दरय दर्शको अनुत आनन्द प्रदान कर रहा है । इसके सरक्षण हतने ही अनेत कर्न-वर्गगाएं इसके निकट आती हैं,परन्तु यह बरेपसे न प्राप्त हो आते आलम्ब उत्तम समा गुरुने रहीत है । अनंत अनुपन गुरुने न्यामा होकर भी मान-कनायरित, परममार्द्य अधिग्राम, त्री को मति, निमे ही मुन्तकारी हो रहा है । आनी सरळालें तन्मय हैं। काररहित, पात्रानु ब्रह्माने तिसमी आर्जियमुणवारी, सपरा-तिहारी हो रहा है । मन्यानकारकरी, अमन्दरा-निवारी, परम राधार्थ मन्य-कांक विर्मातन, कियमन्दर-असरी, मृत्य-अविद्यारी हो रहा है। " विकास करें माना विस्ति करें, दिनारी, स्विट बैटर



आगारी साधु ।

(९) सतमयाहित, स्वरुज्यानाक्टन्ती, स्वसर्व्याद-प्रवाही, स्वसावा-नुरागी, सुपासपुर, आत्मसायु आत्मव्यकताठे साक्षाय् सायनमें उ-

मत्त हुआ, त्रिलोक्तको निम्मरण किये हुए मनोहर आत्मनामैक मीतर रमन कर रहा है। में ज्ञाता, दृष्टा सत्यस्वरूप हुं; में कर्ती भोका नहीं हुं, ध्वरूपानन्दी मेग इष्ट है । आत्मसाधुनी यही अदि-चड श्रद्धा, यही गांद रचि, यही सचा छोम इम साबुद्ध परमप्रिय मित्र सम्यादर्शन है। लब्दग्री शुद्धता कालब्द परिणयनमे ही मात होती है, तिलोक प्रमु अनिनाशी मिद्धात्मा मेग ही बाम्तविक 🗞 प है। पर् द्रव्यमय शेकमें भीत द्वारा उपादेव और अन्य क्षेय और हैय हैं। यही संद्राय, मिनाह, विश्रम रहित मचा झान मेरा निय स-होदर सम्यद्भान है। इंदिय और अनिन्द्रय शिय क्षमनाओंसे द-रक्टी बाम, बीच, छोम, मान, माया, राग, द्वेच आदि हिमातींमें विद्रक्षण, प्याध्यर, मामान्य शासंबेदन झानमें तदीन, तथा परम प-तित्र भारम तिहादुदार्में मगन, स्तममयातगही अग्र आवरण मेरा सदुरु सम्यक् चारित्र है । १५ रत्नत्रय लब्द परम वर्षेश्च गरी आत्ममानु प्रकृष्टित बदन आत्मप्रमादनाहै हेतु सर्व आत्माओं ही स-मानमें उपन्थित हो बोबरातमधी सितियी उत्तन समामन परम मुन्दर देरीकी उरामनका मनावको एक गुरुपानमें शिरातमन करम महेरे मात्र लमुकाम दिन्दि अद्भुत बक्कात्र की मिटात्रका



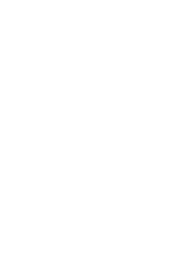
कहीं अनंत मुख है, कहीं शायक सम्यक्त है तो वहीं परम पैर्प्य है; कही निराकुछता है तो कही निराकुण्यत्व है, कही बीतरागता है ती कहीं शिवनारिसे संयोगता है; कहीं अनेत राम है ती कही अनंत भोग है; कही इन्द्रिय-भार-वियोगता है ती कहीं अनीन्द्रिय-भाव-प्रगठता है; कहीं जगन् विस्पर्णत्व है ती क्टी नगन् स्मरणत्व है, कहीं विखेकज्ञता है ती कहीं विखेक-यू-न्यत्व है, दही उत्तम दया है ती कहीं उत्तम ब्रह्ममर्थ्य है, वहीं उत्तम शीप हैती कहीं उत्तम आकिथिन्य है, कही परद्रव्य-रस-रिट्या है वी कहीं स्तद्रव्य-स्म-प्रवाहिता है। इन गुणस्पी झाडों ही शोमा और मुन्दर मुगन्योंको छेता हुआ यह अंतरातमा एक परम विसीर्ण निमेठ भर्म-ध्यानम्या वृक्षकी छायाँने विराजमान होता है। इस वृक्षके उत्तन मार्देव बर्गा अत्यन्त कोमछ और मनोहर पत्रीका दृश्य इस अतगतमान्ये ज्ञान चतुःत्रों हो तुत्र ही तरावर कर रहा है। उत्तम मन्यकी मुगन्यित पत्रन इस बृक्षमें मेंट करके ज्यों २ इम अंतरात्मा है मन्तित्वको लगती है स्पों २ इसके अंतरेगमें शिकता रिंग निर्मेठ होता काता है। मेद-सिद्धानके मनोहर पूज्य जिस समय बायुके मन्तरमें दृश्कर इस अंतरत्मको उत्तर पटते हैं इसका मारा श्रीर उपन्ने सुग्राहमे महक नाता है। नद हम अंतगरमाधी मुख-व्याम व्यानी है यह उमी मनय इस वृक्षके नातुभारत बजदो लेट केल है और उसके अरर माँ हुए मुब-मनुरुध पान-ध्य अपने तुन्त और दूसको दूस काटा है। इस मुक्तें अर्फ़

क्षति है। हमका असर रम अन्यत्साधी पाम पुर काटा है।















रमी और मुझे प्रेरित कर गरी है मुझे उत्कट आकाशा है कि. मैं चित्र मन्त्रोकस्थारा जाद सद्दा केना रहे-यही मेरा परम सुकारण 🕶 है। क्षेत्र बर्भा वागकी एहियाना है, वृद्दे उस मार्गपर घटना है।

रत ५३ मध मानप्रना नहीं, पूरि अद्भात स्थापीनना नहीं । तर ६२ रेस चन के पैन आशा परको पहिचान किया र अञ्चयनम् स्ट्रुवास्याः मुद्रे अव मार्गपर मुख्येका विक्राल

स्ट स्टब्ट 🐣 छ स्थम । ज्ञानम विमुत्त है । उसका अभिमान ा प्राप्तान है। रेगोर नहीं बनाता है। में अभिमानहै 🛫 🚅 🖟 🚅 अर्थ । अर्थ । अर्थ अर्थ अर्थिण करते हैं वे सम्पक्ताहित

🤋 🕝 🦸 अञ्चलनद्व अभार्य्य उम्म भ्यात्रम्ये बन्ते हैं । ८४० राष्ट्रः स्वयमयम् जातुर्वतो च म स्पादिरपुणानीः -गु-२ इत्रदार राजिया ज्यानगरन । शास्त्रम्य तो मधिति पाती उस तत्त्व प्राप्तः अल्यानात्मावनम्पिकत्त्रात्मन्ति सम्बन्धः

1-1774 🕝 🚅 🗝 👓 🚁 अंग बनावरी यह मुझे पुरी शासरी e in a single state of the feather

and a second of the second of ्र १०० व ६३ मा लोग के विसम्पर्ति

arement and







है। बन्य हैं ये छःतप ! इनकी सहायता मुन्ने परम सन्तेतित

और पुष्टकर रही है। गम्नवर्ने यह बाह्य तप तप ही करूलाने हे योग्य हैं, क्येंकि महांतक संकरन महित विचार है बहांतक निर्विद्यन स्व-संनदन क्रान नहीं । निर्मित्रला स्वयंदिन झान ही सालात् अंतर्गा मात है । पान्तु जनतर इस भावती श्राप्ति नहीं तनतर मही इन छ. बहा वर्रेको भाज्य निग्नर तपना बाहिये । यद्यीप हुनहा भंदोंस मन्ने निर्माम नहीं बनाता, मुन्ने गुणस्थानींगे अतीत नहीं रख द्या, किन्तु मुझे बर् गुणम्यानवर्गी रस्कार सामाजन करायांचरीही मानुके नाममें गुटित रमना है सो गत्य ही है। मेरेने इतना सीम है कि, मैं तीन शेक-तिनगी शिक-तिवाहे राज्यकी पाठ । में में इतन कीच है कि मैं समागा मग्न ध्यानाहिंग पुद्राशंक कर्म-बरीपाओं है। इस्य कर्म । मेरिमें इतना मान है कि में आनेती विद्व ममान मर्वेत्वृष्ट परिवारणा मनप्रता रहे । में इस मार्नेये भागी वर्त मान सामारिक अवस्थाकी सूत्र तत्त्व है। मेरेने उत्ती साचा है कि मिद्ध और अर्थन करते अमील हैने ग्रुद्ध गहर्रों की काले हुए दी में देखा ही सामना हुद्दि में साथ विद्व नक बहुतक बनात का का हूं। देते मेंचना कुछ है और अपान का ह तो भी मापा है । इस नाव कार्योंका करी र ११ के स्था केंग्र रहण करा रूप राष्ट्री होगा है। स्वर्ती में मान नदाव ४६ त बावर दार राद्यांत्रह क्षेत्र विकासी है साम्बर्दिय गार्थे । महाप्तां बनुसरानत्त्रत्ता के स्टा हेल है।















वृतिहो भीकार अपने न्वरूपे छीन करना, यही हुत बातका उपय है कि मैं दीनों गुकामोंने बाहर हो नाऊं और अदूर्व तेनको प्रकाशित करना हुआ दुख्याचा रहे। इस निधयका चारी उपवास सम्पर्याधी अपनी अनींद्र अधिवादे कहा नव कभी अनतातुर्वाधी कपायते करा हो माना है कि, उसी समय सम्पर्द ध्यासे बनित हो मियाना गुजमानोर्ने आने छाना है। सम्पर्ने कोरिको अधिक छ। औरथी

(अपंच्यात ममयोती एक आंचरी) और बमतीस कमती एक ममय टहाकर मामादन गुणस्थानमें रहनेचारा कहराता है । जिम ममय सप्यक्तमें निमक्ता है । इन्हीं रिपरीकी वह गह-

(84)

छता मो सभ्यक्तमें नहीं वी पैछ होने छगती है । वह गहछता अनंतातुर्वती होमके क्या हमी निध्यपमें परकने ह्यानी है कि-निषय मुन ही मुन है, इमग्री प्राप्त करना ही उपादेय है।इन इन्द्रियशि-बीकी गहल्ला निक्तमें कमी मायाची भी नेहा कर देनी है, निसंसे दह विदार आने स्थाता है कि परका विधासवात हो व परको हाति हो, हमछे ही पर-वेषकतमे भी सिप्य-मुलाई प्रति करनी पारिये । बाद्य बने को सम्यान्त गुणम्यातमें मोल मायतके छिये करता धा बही क्या बने अब मायाक्टर-कर हो। माता है। कमी अवन्तातुबरी मान-धी रेजर हो रही है। जिन यह प्रधा महेंघी मुम्पर्श नहीं कर वहरते हेल या, उन्हीं वहींचें उत्माचना बाने छग मानी है। बर्गन गति श्रीर बाने बुलके परिषद्धे विचार अधिमान करने काल है। बारे बाची मुद्दा देगमहारी बादुनी माने का दाता है। 🔸 कार्त करहे दुवरिंग करिड रात गतमें गाने हम तरह है।



यने अपूर्व प्रकाशासे गिरकर ऐसे घोर अंपकारमें आनाता है हैं

किर अपराी बस्तुको मुख्य और सच्चे सुख्ये उपायसे विश्वह हो अ
पदोंमें तुस होता हुआ आहुळ क्याकुळ रहता है और रूपमें रे
स्वपदका ख्याळ नहीं करता है। यथाप यह परमानंद सार्थरास्ते माद पानेके अवसरसे ज्युत हो जाता है, परन्तु इसकी पूर्व
भावियों रहते
हैं। निससे इसकी वृत्ति दूसरा अवसर कभी न कभी पाकर कि
चीभी सीहोंमें चड़कर प्रमानंद-सार्वकों देशी है। यह निक्षय है
कि यह जीवासा चीभी सीहोंमें चरेगा। यदि बहुतते चहुत समय
खो तो उतने करकर अभाग ही चळ इस्ते होगा वितय काल एवं
जी वोदा करकर अभाग ही चळ इस्ते होगा वितय काल एवं
जीवारों समस्त पुरस्थित महण करते हुए बीत जाता है

इटी भी सराहनीय है। तथा यह बभी न बभी श्रीत्य अरहंत और सिद्ध अवस्थाचे अगस्य प्राप्त बनेरा। इस अनेश्वसी उसी तरह नमस्कार बन्देनेंद्र योग्य है मेसे हम श्री श्रेणिक राजांकें नीव सहिया प्रथम तीर्थिकरों नामकर बन्दे हैं। इस भव्यानाची एक इन्हें विस्मादिरकी सांध्य कर की है। इस अवस्थानाचे एक इन्हें विस्मादिरकी सांध्य कर की है। वही आकर्षता इसकें फिर अपनी और कुम्मण्या, अवस्था कुम्मण्या और क्षा कर्मणे श्रिवन्य मान हम समय इम श्रिकेट में हिशानित समत सामाद गुणस्थानवर्ती जीरोंके निभयमें सिद्धान्या अनुसन्दर उनके रूपके अपने जीरोंके विभयमें सिद्धान्या अनुसन्दर उनके रूपके अपने जोटोंके हैं और ममस्य इन्द्रियायीन मुतामासीमें

किञ्चण परम साधीन अनुभवानन्द्रका न्याद छेते हैं।

(अर्थात् अर्द्ध पुद्रलपरावर्तन) । वाम्तवमें यह पतन किया हुआ मिष्याः











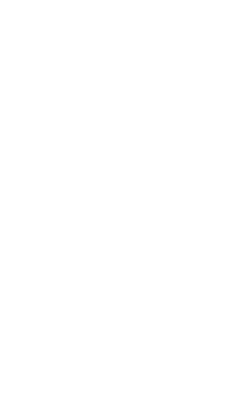




श्रावकका मोक्ष~महलमें प्रवेश **।**

(37)

आतन्द-प्रदायिनी, साधु-मन-मोहन रूप-धारिणी, अप्रमाण शाप-कला-स्वामिनी, अद्भुत स्वक्ता नारिके कार्ने मोहित हो एक शीवाला टमडे शांत सगवर और सुगुण उपन्नमहित **दम राने मर**ण-के द्वारपर आवर उस नारिये मिलनेकी गुन्द रुपिके बारण उध्म-इति हो रहा है। वह पाम प्राणप्यापि हम नने महल्ली दिलाएर निगरित है। मी कीई साहमका महल्हे उत्तर नक बर आ सका है, बड़ी इस नारिने सम्मिलनका खाम उदा सका है । यह मेंदी विक-नर्रामें भावास-विन सामारिक सर्व संयोगीको हेन मानता हुआ तया अपनी पीरिकतिनै वैगायाधी वान्तिको विम्तारता हुआ इस महाहु-बर बदनेदी मात्रम करके आता पर असी बहाता है । इस मद-सके बात बन्द विकार और बमाज बने हैं। निम्रोह मामनेमें अप-स्यारुपानावरमा बचाय अपने बठाँ भद्रांनमें असमर्थ हो। नार् है। बर्ग हम प्रजार है पहाँद सर्वाचे प्राप्ताच्या है । इस प्रजार पहाँदे सर्वाद श्री साम है। यह भारतम् सन सम समये नानेका जातार करना है। रक्त-अन्ति। क्याँ क्याँ बहुत क्षेत्र है, क्यों क्यों पर बहुत हमा । विभावता स्य कोन्द्र । प्रति प्रति गरि महत्र कर है। जा जा रियमधिय प्रियमेश असारी बराया मान है केंद्र नर नव एक्टबर है। तम गाँव क्रम्बर प्रश्निक करने मार्ग है। बार्युक्तुक रूर पर भागसाय-असार्य क्षेत्र। वेष पात की-











 राज्यक करते हुए जिल्ला स्ट-झालकी अपनि महाक्षेत्र राज्य क्षात्र हुए ११६ एक दला है और निर्मामुक्ति अपनि राज्य क्षात्र कर हुए लक्ष्य के अधिक दे शुक्राकों राज्य वार्यक क्षात्र मात्रा मा गुम्म दे

्रात प्राप्त करता है। आप-प्राप्त प्राप्त श्राप्त होते देशना प्राप्त प्राप्त करता श्राप्त करता करता प्राप्त करता प्राप्त करता दुसर्गि प्राप्त समहत्त्व । प्राप्त करता करता समासि

पत्ता स्वस्तरत्व । नाइतः त्रतिस्व समास्ति - नात्ता हरता है । स्य पार्यायहरा स्वस् - र यात्तव सम्बद्धा है । स्पत्तवस्ति सहस्र तरु विस्तयात्त्री है ।

व्यवसी साहह नक्ष्य विद्यापन है। १८४ मा सन है प्याप्त नहें इस्पर्य १८४ मुख्य स्थापन अपनी

. तम के 3 स्वयं क्षि ए जंबर प्रकार के जंबर ही

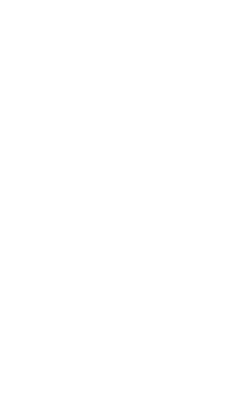
11 kg

. er- 8

20 O











AND CALL COLOR STREET, THE PARTY OF STREET The state of the s क तक देशा और अभिन्यान प्रदेश प्लाह है। म जो देखि इस्ति है । अस् यूमय १० र गर्न ्र ज्ञान समान अस्थान द्वादा समोदा और एक सानी र र र र नाम नाम्माणी हवस प्रकट बालन का मणा है। ाक र र र र र र र र र राज दार्ता भन और मनहरण परमा-दर भाग गाँच र इद्दा साह वन्त्र प्रधानना निष्ट मान है। १५ १०० ३ व ब्राज्यम्य तथा वर्तमान है। यून है र सम - १ ९ २ १ करते थे.स. बायल विते ही प्राप्ती नत्त्वमें मान के एक लेखि एक हो। नामी द्वप प्रतिने हि रव अन्तर दिश जिल्हा छ रोते. छत्रपदे भाव पुराग पूर्वी सर्वा क इन्दर्भ को वहत हम सक्तामनोहि अनुर्व कार्य शिव *चेंद्रे प्राय सम्बद्ध वर्ग व्यवसी अनुसारित* शाह z. 7 .







. १ तह 🔑 मा मार्ग मन्यण मन्यण उसके आश्रय छेनेसे , र १ । १८२। विशहसन्यक्षे हस्तनापुर रासाध्य ज्ञाहर होनेवाले हैं। . १११ अपन एक अनम्हत मात्रकेर सम कर देवी। . १२ इपर मनीके अहेर .. , र्ामगमा है और . . र र सः हतर्रा वानवे। . . . 'ear 1941 . . . ई अनत काल ... हे के देश पाकर मंदं श्रष्ट ा श्रीमारी. 1 . 14. 557.

> ্ণ নস , , , , , , ,











र्योकी आज्ञा व अपनी अमन् मान्यताकी तृष्णाको हटाना चाहिये और निकल्य समाधिक आगनमें नाकर क्छोल करना चाहिये। उस निर्मात आगनमें नाना प्रकार नयोंके विकल्परूप-काटे व कंकड नहीं है, नयोकी पनका अभाव है और न वहां गुणस्थानरूप उत्त नीचपना है। स्वरूप निमल आजनमें ही समण करना मेरा हित है। उस नजनमें अने हान्य तमीन मेरी विया मेरी निकट आ नाती है, े-सक करतिमें जने तय क्षण सभावण और परस्पर प्रीतिका प्रादु-मा बान क्रमा अवह अवह है। उस धरम सामायिकर्ने मेरा र म अगर र १९८ व "येतिका पुत्र-रूप ही **हुआ मानी सकलता** हा या । जेमा । इमें अवस्ति है परन्त भिन्न २ ही रहते हैं न र म मिल र ह रहता हूं मेरा स्वरूप वास्तवमें अध्यानाथ है। यार विजेप रहातील आर मन्द्र शहद, तात्र आर मन्द्र गन्ध, सीन रे आर मन्द्र रम. नीत्र और भन्द्र स्पन्न, तथा भागे व हल्के पुद्रल मकरा मत हैं' केरे जननेन अपने स्वामाधिक वेगको लिये हुए चले , आरोब नय किसे करतमे २३ । का नहीं प्रशास**, कोई मछीनता** नहीं अला है. जन्म नट यह होता। यह मेरी अनुभृतिका ही

वीर पुत्र ।

(\$\$)

रानम्बर पॅनेक्स भाषायाः सम्पर्ध दिव निरमुखक अवशेषन अपने हान दर्गारे प्राप्त अपन्याके प्राप्त हो सहार्थ । यह द्वार्त अ क्रमाय परिवासीने सम्बंद निर्देश-सम्बद्धाः हो देश मेर-रिवे ध्योक शिक्ष का रहा है है। मनेत्र शार्षे जात गत का मेल-युद्धवे नेत बार महाराष्ट्री कर ए दिने भी राष्ट्री की के हर वर्षे कामारी राहा विवेद कारमें क्षेत्रे ह्य इरक्ष शेष द्वारे जुल जिल अवहारित होता है। यह समय अनुसामाई चरी राज्यमा और एवड्डम एवड्ड कार् रूमा हो साहै का इन केल अपराप इस हेट्टर रामाओं हार र मेरे ज़िल के राष्ट्र रहें दान है। हा राहा का र्रोप्त क्षेत्र हैं । है देह र स्त्र र केंग्स्ट्रिस्ट पट अपराज्य Eggs of the court of the graph of है जातका धार प्राथ ह President control



प्रमक्त निमाप ज्योतिके दर्शकों हुमाय हुज ब्यूक्टराज्या हेक्स संतोषित हो अपनेको मुखी अनुसर कर कार्य

आत्मीक रेलगाई। (३१)

रामात-तत्त-वेदी स्थार बनुष्ठ हेन्द्र नक्क कर्यक्षेत्र रहता है। मन्पाइष्टी जीव अपने अन्य प्रार्थिक स्रा भी अपनेमें नहीं होने देना है। कि मैं क्लि है कि क सन्तमात्र उसके अनुभव गोवर है। स्ट्र इंड्यू त्रीवद्मा नीवत्वमात हमकी हर्डाके स्मृत है। इ आरम्बर ही हम निगतमंत्रे तिये स्टेन्ट्रेस है म्बास्ट्रम्बन निधय निगणनम्बर सङ्ग है 😓 📜 मार्थ ममाविमें समाधान ग्रहण सन्स्वत्रहा 🖘 भेषु प्राप्तान । सम्मत्तवा सार तेते हैं। इतर्श सम्बद्धाः । १९८३ भागा । क्यान है। निसंदेश प्रयोग स्टाहर है। हैं the many journer or see the second हा। चम्मार समाचार १६ स्ट 😄 🛴 🤇 स्ट के प्रकार के उन्हें का का का कर प्राप्त इसे विश्वेष के समझ्या कर हैन्द्र हैं है । इसे विश्वेष के समझ्या कर हैन्द्र हैं । The second of t निष्ठ सह सहसे हन्दे 🚌 🚛 भिन्न के किया है कि कि _{कि}



रोक्षानेर, (राजपुनाना,

तत्त्वरूपी अंजन ।

(३५)

आत्माराम अभिराम केवलघाम स्वकल्याणके सन्मुख हो सर्व अ-पने उन वैरियोंसे मुंह मोड रहा है, जिनको कि थोड़ी देर पहले अ-पना मित्र समझ रहा था । अनादिकी भूल मिटाके अन यह स्वपथ-का अवलम्बी हुआ है। इसने अपनी सब उन्मत्तता वहा डाही है तथा शम दम और यमसे परम शांत, विवेकी और स्वआचारवान वन गया है। जिनेन्द्र कांपेत स्याद्वादरूप परमागम द्वारा प्रदर्शित तत्त्वरूपी अंजनको लगाकर अब इसने अपनी मिय्यादृष्टिको सन्यग्दृष्टि कर दिया है । मोक्ष-मार्गमें साधक और वाधक ऐसे दोनों प्रकारके तत्त्वांका सत्य स्वरूप इसने पहिचान हिया है । इसके अंतरंगेंग भव-रुचि टूट गई. इन्द्रिय-मुखोंकी तृष्णा विषट गई तथा क्यायोंकी प्र-मरता मिमट गई है। यह अब अपने रूपको देख चुका है। इसने अपनी गप्त निधिको पहिचान लिया है। अब यह सर्व परका कर्ना चकाकार अपने ही मुख बनमें अपनी ही नगरोमें, अपनी ही निधिके ू द्वार स्थापन दरमा चाहता है । मोत-मुख्का तिपासु हो, अनीन्द्रिय ग्राममे पहचन हे इसका स्थान्य हे, बेनगणनकः मुहाबना भोज-न हं इसके प्रिय है। यह अलगाम अपने शुद्ध स्वरूपकी और . इंग्वन २ अयान नहीं है। इष्टि निबेल हैं, इसमें बहुत देर नक एकमा देख नहीं सकता। यद्यीय दहर २ कर पुन. २ अवलोकन . इस्ट हे तथापे एकत्वर अवस्थाको न होनेने किंदिन् आकुलिन रहत है। परन्तु इसका करन्वार देखना इसकी ज्योतिकी शक्तिकी



इन कि पताचारी कान-दिने रोमपान होते हैं उसी पराज्यके पर स्टेश भेरत अस्तर यो अस्टेश्न कर उस रहते हैं, दे ही मुद्रा-सन्ह चंद्रसन्ने अनुसन कदारों पासर न्यानु-टक पन बाते हैं। ऐसे मुस्तमुद्र विनाय परस उत्तरी निव तिरेक्त समाधि का अरोहर करते हैं, दब दीन होनी जानेते एक देव और सर्व एकको अनुसन्दा सब ही परसाला हैं-देना सम्पत् विचार करते हैं। यह विचार उनकी संमार कारती ह्य हो भी विस्तहद्द्रम ठावती हे बड़ा है। वहाँ अस्टार्म रूप बृहोंके देवता हुए उनके देवन-रूप मुक्तकरे प्रप्तकर अविधय कुत होटा हुना सन्यक् हणाऱ्या समस्म-सरोवसँ निमन्तर होटा है और दिर विचित्त कर्म कविनको मेरानात महुनेत होता हुना अपने अंतर्नुख इसतको प्रमुद्धित इसता है वया परमें पवित्रवा प्रतस्त हेता काल्यह करवा है कि माने। मैं सब्दे-हिद्र, तिरंतन, तिरावर, कानपुन और नुख-धरावर हूं । पह बाल्हद इस बस्बद्धारीके बाल-दनके पूरि देवा है और यह दीव अपने बहुदने रोग हटला अन्य-पुष्ट ही अपने समादि राष्ट्रमेंने हहत है और प्रत्यह बेहरें उनकी राक्तिको हीनकर बिन्दास्ट्रबर अनुभवानंद्रका स्टब्लिक है ।

आर्माक हलवाई ।

नेन्सकामने पर संदेश प्रकार दक्षित्र हेर अधार्म. चिक्रमण-वर्षणकार संदेश सम्पाधाः स्थापनीति दक्षमुद्धीली ज



कार जिस परमात्माकी कान-दृष्टिमें सोमायमान होते हैं उसी परमात्नीके परन मनेहर मंगह आननका जो अवछोकन कर स्त रहते हैं, वे ही मुधा-समृह चंद्रमार्क अनुरम कलको पाकर म्याम्-तक्र पान करते हैं । ऐसे मुख्यमुद्र विन्मय परम तपसी निव निर्देशस्य समादिने वद आरोहण करते हैं, तद तीन खेशकी जानेते पृथक् देव और खयं एककी अनुमनकर खयं ही परमात्मा हैं-देता सन्यक् दिवार करते हैं । यह दिवार उनके संसार करननसे ह्य हरे भरे विक्तल्हादरूप टनवर्ने हे जाडा है। वहां अवन्तगुन हर कृतें है देवता हुआ उनकी वैरान्य-हर मुगन्यकी प्राप्तकर अविदाय तृप्त होता हुआ सन्यक् हगाला सनरम-सरोवरमें निमञ्चन होता है और बिर बिराजित कर्न कडिमाको मेद-झान साबुनसे घोता हुआ अपने अंतर्मुख कनक्की प्रकृष्टित करता है तथा परम पवित्रता प्राप्तकर ऐसा आल्हाद करता है कि माने में ख़बे-तिहरू, निरंतन. निराकर, अन्तुंत और मुल-धाराधर हूं **।** यह आल्हाद इम तत्त्वज्ञानीके आत्म-तनको पुर्छ देता है और यह जीव अपने बहुतने रोग हद्यक्तर आत्म-पृष्ठ ही अपने समादि शत्रुओंने लड़न है और प्रत्येक नेटमें उनकी शक्तिको हीनकर विजयानस्य अ**तुभवानंद**क स्वद हेन है ।

आत्मीक हलवाई।

٦,

नेतनकराज्यतं, सम्मन्तमः प्रहरः भरीन्यम् हेयः अस्यामं, मिद्रभुव-द्रशेनकर्तः अतः सम्पूरो स्व-मधियोमे रहम्म हो द्विन



ज्ञानावरणी, दर्रानावरणी, अंतराय कर्मीका नाराकर, स्वामाविक मुखको पाकर तथा शिवरमणीसे संभाषण कर जीवन्मुक्त हो अनुभ-बानन्दका अनुपन स्वाद लेता है।

निजगुण गणना ।

(34)

परम पुरुपार्थघारी, दिव-विहारी, झानानन्द-रस-संचारी, सस्यन्द्रधी आत्मा अब अपने आत्मीक धनकी गणना करता है तब गणना करते करते कभी भी अंतको प्राप्त नहीं होता। अपनी राक्तिकी हीन प्रगटताके कारण धोटीमी ही गणना करके थक जाता है और आराम हेनेके हिये अपने हाम गुणोंने अन्य अनेक द्वाम भावोंकी गणनामें स्या-जाता है, परन्तु ऐसा करते हुए भी इसको अपने आसीक वनकी गणनाक्य स्वाह रूउता नहीं। इस कारण तुरंत ही निज शक्तिको सम्हार निव धनकी गणनामें एक्टीन हो। जाता है। यही जान भवतान-के शंत का देती है और अपने प्रत्येक्ष मामेलमें शांत कर देती है और असे प्रत्येष्ट समीतनी हम करी जानाकी स्वानुत-समग्रे . एक कुर प्राप्त करते हैं जिस कुंक साद है यह सम्बद्धी रूमी बुरेडे जिये कि उत्सुव हो जाता है जिसे समार-क्यामें बड़ा हें अर्थ के महमीर का के उनमें कि हुए एक किन्दुरे चनका . इसके अधारे के देव देव केला गृहता है और आप्रध्यानक अलगान हे सुद्धे रेग्नेहें है। इस बन हो नहीं जिल्ला है उसे नाहुन करता है, परन्तु यह सन्यक् पुरुषाधी है, इससे मात्र आशा ही करके चुन नहीं हो जाता है। इससी रूपि इसको शीव ही स्तयेद-स्तरा अनुमन कराती है। क्षित्रेक पद्त्यपय पदार्थोंको सम्यक् ध्रद्धानमें रतनेवाला यह मुधी जन सम्यूर्ण पदार्थोमें किसी तरहरा मी सासारिक राग और द्वेष नहीं करता है, कि तिन पदार्थोंको मिल्या इटी सम्बन्ध करके अपने मान देवा है तथा मनको प्यारे पदार्थोंन

राग और अमुहाउने पदार्थीमें द्वेष करता है। यथार्थ वेदी ही वास्तवमें आत्मज्ञानी और मुखमई है। वही बीतराग–विज्ञानतारूपी अपूर्व शक्तिमई देवीका सचा उपासक है । वही परम उत्सवमई आत्मीक असाडेमें समस्त त्रिष्टोक जन-समृहके सन्मुख ज्ञानानन्द नाम कृत्य करके उसी तरह अपने मोश-रानाको रिप्ताता है, निप्त तरह इन्द्र जन्मोस्तवके समय श्रीतीयकर प्रमु और उनके माता पिनाके सन्मुख आकर आनेद नाटक करके आनन्द करता है I , यह मनयमारका नाटक परममुखरूप है। नो इस नाटकके रसिया ्रें-ने इम दु.सहप मरातापके अन्दर निवास करते हुए भी मोल-बांसकेन परमास्हादके मोका हैं। यह बात बिछकुछ सत्य है कि . अनंत गुण पर्यायवारी आत्माका स्वरूप स्याद्वादके द्वारा सम्यक् . निश्चय कर नो कोई नीतात्मा स्वारम स्वमावमें छवछीन होकर तिपय कुंपायोंमें हटना है और पुन पुन शुद्धारमानुभवका मावना करता है। बही मीत बाल्यानुभव करके अनुभवानव्दका साद हेता है।

न कर्ता हूं न भोका हूं।

(३९)

मैं वंघा हूं व खुटा, में संसारी हूं व सिद्ध, में क्रियावान हूं व अकिय, में सरागी हूं व बीतरागी, में मूद हूं व चतुर, में दुष्ट हूं व सज्जन, में कर्ची हुंव अकर्चा, में भोक्ता हुंव अभोक्ता, में सुस्म हूं व स्पृल, में अनेक हूं व एक, में कोषी हूं व शान्त, में नित्य हूं व अनित्य, में दृश्य हूं व अदृश्य, में आगमज्ञ हूं व स्वभावज्ञ, में लोभी हूं व संतोषी, में जन्मा हूं व अजन्मा, में सुखी हूं व दुर्सी, में वर्णवान हुं व अवर्णवान इत्यादि अनेक वचनके जारोंको इन्द्रजालकासा फैलाव समझकर जो कोई उन्हें दूर करता है और इन विकल्प-जालोंसे अतीत निजरसमय सातात् स्वभावमें स्कुरायमान ज्ञान ज्योतिको ही ब्रहणकर सम्पूर्ण टोकालोकके पदार्थोंके सम्यक् कारण और कार्यका ज्ञाता होता हुआ अपनी शुद्ध चैतन्यमयी नातिसे ही नाना करना है और उनसे स्वरस-वेदनका आनन्द पर-स्पर छेना देना है वहीं आत्मा नत्त्वज्ञानी और आसन्न-भव्य है। यही म्बभाव-बोर्जा अपनी उपयोग परिणतिरूपी अलको बिलोक-बनमें ममेटकर अपने स्वरूपके ज्ञानमई नीचे खाड़ेमें भरकर अटट अमृतक भहारका धनी होता है और उस धनक सुखमय मद्रों एमा उन्मत्त हो जाता है कि रच मात्र भी अन्यकी परवाह नहीं करता । एक निज अनुभूतिका ही प्याग रहता है और उसीमें र्गत करता है। हद मन्यक्तकी अवल महिमा उसके स्वरूपमें



विक्तसमें तहीन होकर यह अंतरात्मा बीतराग-विक्तानी रहकर तथा रिाब-तियाके मोहमें रित करके निरंतर अनुभवानंदका स्वाद लेता है।

गतिमार्गणामें में ही हूं।

80)

त्रिलेकका स्वामी, शिव-रमनीका वर, आत्मीक अनंत गुणरूप धनका धनी वास्तवमें में ही तो हूं। मेरा अनंतज्ञान, अनंतद्शीन, अनंतपुख, अनंतवीर्च्य मेरे ही में हैं। मेरे निवासका म्यान मेरे ही आत्माका असंस्यात प्रदेशमयी चैतन्य नगर है।में गतिमार्गणासे भित्र हूं। मुझे कोई चारों गतियोंके स्वांगोंने ट्वा चाहे तो में कहीं भी नहीं निल सका हूं। इन गतियोंका हेतु, स्वरूप, कार्च्य, और फल समस्त ही मेरी निर्मेल शुद्ध परिणतिसे निपरीत है । अहमिन्द्र, इन्द्र तथा सुर अमुर सर्व ही निज स्वभावसे भित पर पुद्रल कर्मरूपी वर्गणाओं के निमित्तसे क्सने २ रूप. पद. कार्च्य और म्यानमें एवडीन हैं । उनकी सारी कीडा, उनका मारा अमण, उनकी मारी धर्मकिया मेरी शुद्ध परिजामिक कियामे सर्वेष जिन्हा है। चलकरी बसभद्र, नरायण, प्रतिमारका क्रमेंडर अडि मर्ने हो सर अपने १ पुरस्कें अहकारमें अध्य गाँउ विकास हास ते उनमें विकास भाव भारतेमें काही ही चिम्त कार्त हा मेर्न स्वामिक निधानको साङ्क्ष्य है। अष्टपर मिंह एक अर्थ स्था सहस्रकाति धनना समना, क्रमा तथ सम्म ही होन्द्रियारि विकल्पय र रूपों जब, अग्नी कय, प्रत्येक बनम्बन, तथ संघरत निर्वेतारी अदि प्रारंगीयेंके सुरंग क्षेत्र



त्रिहोकाहोक काता परमात्माके दर्शनसे विमुख रह उत्छटतया स्परीने योन्य पदार्थोंको ६४०० धनुष दूर क्षेत्रसे, रस हेने योग्य पदार्थोंको ५१२ घनुष दुर क्षेत्रसे, संबने योज्य पदार्थीको ४०० घनुष दुर क्षेत्रते. देखने योग्य पदार्थीको ५९०८ योजन दूर क्षेत्रते तथा सुनने योग्य पदार्थीको ८०० धनुष दृर क्षेत्रसे जान मृष्टित बुद्धिकर उनके रागमें तन्मय रहते हुए स्वरस-स्वादका टाम नहीं करते हैं। परन्तु पंचेन्द्री नीव मनका धारी होकर भी अर्थात् उत्हृष्ट वीर्यकर चक्रवर्ती जीव होकर भी तथा स्पर्शने योन्य, स्वादने योन्य, और सुंबने योत्य पदार्थोंको नी नी योजन दूर क्षेत्रसे तथा देखने योज्य पदार्थीको १७२६३ ई योजन दूर क्षेत्रसे *, तथा मुनने योज्य पदार्थीको १२ योजन दूर क्षेत्रसे मालून करके भी तृस नहीं होते और अपने मनमें इस बादकी ईपी करते हैं कि श्रीअरहंत सिद्धपर-मात्माके सददा हमारेमें ऐमी शक्ति क्यों नहीं पैदा हो जाती है ! निसमे हमतीन होकके ममस्त पदार्थों को एक ही समयमें विना इन्द्रियों-की सहायताके ही उनके समन्त विषयोंसहित जान हेर्बे और इस कारण आकुलताओं के प्रपत्तींने दृर नहीं होते । वान्तवर्ने संयोपशम ज्ञान और संयोपशम बंच्यंकी गन्य कहा तक हो ! पुद्रलंके विका-रोका मन्बन्ध आत्मको विकारी बनाना है। ऐसे मन्बन्धका मोह ही आत्मके पर्यन दुन्ने, गर्ग, द्वेषे अर अकुलित करता है।

७मास-न्याधका चंद्रका अन्तर्य । जाव महा च्या आहे हो व हा सकी प्राथम चंद्रकी अपने गार स्थानमें प्रयाद का महाह प्रथम दूरी स्योध्यम । १६६ में पालन होता है



जिस कायमार्गणार्ने अमते हुए एकेन्द्री-पृथ्वी, जल, तेज, वायु-कायिक जीव कमसे मसूर व चनेके सहरा गोलकर, जल-विन्द सदरा गोट, सूची (सुई) सदरा ऊर्द बहुनुख, ध्वना सदश चीकरेर आकारवाले सर्व ही उत्क्रष्ट व अवन्य वनांगुलके असंस्थात भागमात्र अवगाहनाको घेरे हुए निगोदरहित ऐसे अहस्य शरी-रको रक्ते हुए कि जबतक इनके बहुतसे शरीरका समूह न मिले तवतक इंन्द्रिय-गोचर न हों, मूर्च्छित रहते हुए जड़मई बने रहते हैं: उस कायमार्गणामें उस अनुभवीका गमन नहीं होता। निस एक जीव वाली प्रत्येक अप्रतिष्ठित व अनेक बादर निगोदमीव आश्रित सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति जवन्य घनांगुङका असंस्था-तवां भाग वाही तथा उत्कृष्ट १००० योजन (छोटा) हंबी, एक योजन चौड़ी गोल कमलकी कायमें पड़े हुए संसारी जीव छेदन भेदन आदिके दुःख सहते हुए आकुाटित रहते हैं, उस कायके मोहर्ने आत्नानंदीका पतन नहीं होताः दो इन्द्री जीव जबन्य घनां-गुलका संख्यातवां भाग अनुंधरीकी व उत्कृष्ट १२ योजन संबी संदक्ती पर्यायमें; ते इन्द्री जीव जवन्य कुंधु हो अनुंधरीते संख्यात गुणी व उत्कृष्ट क्रीप्मकालमें वस जीव हो ३ कोम लन्दी कायामें, चौइन्डी जवन्य काणममक्ती हो कुंधुसे संख्यात गुणी व उत्कृष्ट एक योजन सम्बी अमरकी कायामें, पवेन्द्री जवन्य मिक्यक मत्स्य हो काणममक्तीमे मान्यात गुणी व उत्हृष्ट तीन पल्यके शरीरमें पैदा हो शरीर-मोही रह मिध्यादर्शनके कारण मुछी और वियोगसे दुःख पाने हैं. परम्तु हर्ष हैं कि स्वान्म अवद्येकी सस्यादृष्टीको इस



कित्ससे अङ्ग रहता है। वास्तवमें यह शरीर पुद्रत्वकी वर्गणा-तिसे ही उत्पन्न हैं। जिस पुदृल्में स्पर्श, रस, गंध, वर्णके २० गुण वे गुण आत्मामें कोई भी नहीं हैं; न यह क्षत्री, बाक्षण, वैरय दि है । यह सब नाम शरीर ही के हैं, आत्माके नहीं । निप्त . शरीरका निरन्तर पूरण गटन स्वभाव है, वो भीतर मटनूब आदिसे भरा है, जो स्वयं अपवित्र और जो इसका सर्वा करे उसकी वपवि-त्र करनेवाल है; ऐसे वनमें निस्तृह हो तो वैवन्य वनकी पवित्र-तामें तन्नय रहता है, अक्कयी रहकर स्वसनयके स्वाइमें मग्न रहता है, ऐसे अनुभन्नको अहमिन्द्रोंका वैक्रियक शरीर भी भिन्न ही प्रतीत होता है और वह तीन काल्में भी ऐसे तनकी कामना नहीं करता। जब जड़ तन ही भिन्न है तब तनके सम्बन्धी माता, पिता, भाई, बन्धु, पुत्र, सी, पुत्री, धन, धान्य, क्षेत्र, महल, आदि सर्व ही आत्न-लरूपते प्रथक् हैं। जो मोही इनके मोहमें पड अपने लरूपको मु-द्याता है-वह अपना ही शत्रु, होही और अपना ही अक्रस्याण करने-वाल है । निज रस-रितयाको कोई पर रसके खादकी चिन्ता नहीं होती-वह रामक स्वमबंदन ज्ञान. अनल. गुणवान् . भवदाधि-तारण-यानपर आख्द हो समय २ विशुद्ध सर्वेमे बदता जाता है, और अपने मुख्यूप स्वरूपमें लड़जेन रह दीव-नरोके मेहनेबके अञ्चन आकर्षणीं प्रवेदाकर अधिक दानीदे असे र मार महास स्वस्तुप अनुभवानन्द्रका ध्यान काला है

वेदमार्गणाकी आकुलता ।

दाशि सम उज्ज्वल गुणवारी, अविकारी, अत्यन्त निरुट भन्न भीव कुमुद विस्तारी, अज्ञान-निरिश्च-तम-हारी, मद्यावाप-संतम, सन् रामनकारी, परकन् आधारतरित निरामार परिणादी आकाश विराण, अनन गुणवला भंडारी, ररमात्मा सहरा अंतरातमा आन सर्न्न विरेहरूस जीज मनेन्दानामे रहित हो वेदरहित मुक्त-तियाके सम् णमें दल्विन हो रहा है और अपनेको संसार्त्य रहते हुए भी सन्त रामध्यामे पुषक् मान रहा है, तिम वेदनारीणामें अमण करके यह

अज्ञानी जीव अपना समार बनाता है, उस बेदके विचारको जब हैंव तिरीतिल किया जाता है तब सन स्वचाव ही अन्तराहमाञ्च पर्ग मोक्स-मार्गिम बना परना है। तिम दूरण बेदकी तीजताने त्रिदंधी राचपारी विच्छा कर नर्हतम दिया, व ज्यारहेंव रूद सारिद्वारको स्पर्ग विन्द जिदछ क्षेप्र करा, नर्ह बहुवाया, व दु:शासनको समर्गे तुन करा दुनाति धाम बमाया नया तिम पुरान बेदके सोहर्षे नारी तन शर्मी युक्त हो तिन-दीन्त्रमन्त्र मोनित करते हैं. इस्ववेदरों तिन कीद जान जो न्यारान और महम्बक्त्यों सन्त

्रिमें पन अनगत्मा ब्राह्मण और ब्रह्मणारी हैं। निम श्री दुर्स उत्तरज्ञान पन्डनमाझ मन एखण्ड पुत्र श्रीहमें हव उसे अरामपन्ड म्हण्यान कार्य कुछ का आपणे ब्रह्मित कारण कि उसका गडी ब्रोह

महोते, राजमानदारे जय होने तथा, **आहेर**यात

होनेका कारण हुआ व निस स्वीवेदकी तीवतासे चम्पापुरकी रानीने श्रीसद्दीन सेठ ऐसे शील्यान्को शूलीपर विटवाया व निस बेर्क तीन मोहमें पड़ सी—समान कामवेदनासे आकुछ हो। निज निजानन्द अविनादी। शिवनायके मोहसे छुटी रह सांसारिक पुरुषोंकी इच्छा कर नर्क, तिर्यंच योनि वास करती हैं, उस खीवेदको हेय समप्र जो जीवात्मा त्याग करते हैं वे ही निवेंद अवस्था प्राप्तकर स्मात्म स्वरूपमें मगन होते हैं। जिस नपुंसक वेदमें पढ़े नारकी, नर और विर्पय कामकी तीव ज्यारामे दृष्यायमान होते हुए सन्पन्दरिका द्याम न कर आत्मसम्बद्धाको नहीं पहिचानते उस खंड वेदको सर्वधा हेय समग्न अंतरात्मा आंतरिक मनोहर वृत्तिका अवलम्बन से मुखिया स्पभाव भारण करते हैं । जो इस द्यारा, द्यारके अवयव और इन्द्री निषय रागद्वेषादि कपाय-रून मर्वको अपने सक्यासे पुषक् जानते, मानते और अनुभव करते हैं, वे जीव भवकारी निराकुल्वाहारी मुखेंसे अडीड भन्हारी निगकुलताकारी अनुभवानंद्रका सुवानप रम पी अत्यन्त तुप्त ग्रह कृत्रहत्त्वका अन्तर्ग और विगन्तर्यनेकी महत्त्वतः प्रगट कार्त है ।

क्षायोंकी वंचकता।

.

प्रमान सम्बद्ध जिल्लाहित । स्वतः अस्ति अस्ति । हान वर्तन सुपरिष्यकः प्रशत्को अन्तिसम्बद्धीर्वे सद्याप स्वतेश्व स्वत्येत्रम् सम्बद्धीर सम्बद्धाराज्ञीर्वे अस्ति विस्ति हार्यस्ति



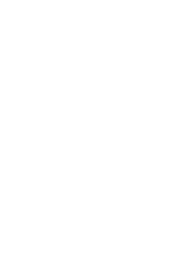
निस अंतर्नुहुर्त बाट दक रखते हैं, उससे संख्यात २ गुणा अधिक बात तक जनते नाया, मान तथा बरेषका अनुभव करते तथा देव क्रोबक्से जिस अंतर्भृहुर्त तक मोगते, उससे संख्यात २ गुणा बार दक करते मान, माया और खेमको घारण करते हैं। और मनुष्य निर्देव निप्त अंतर्नुहुर्व काल कक सेम क्यापको रखंदे हैं, उसने संह्यात र गुन्न बन्न वक कमने मापा, क्रोप भीर मानके हमझेंकी सहन करते हैं। बालकों चार गतिने इतर रस प्रसारे मुख्युन हम धन्योंसे देश करनेशस इस इंसरी वैरपद्म बाहर-भूत्य कराय ही है । यही बन्धहम हेबड़े देवार करता और निष्यादर्शन *रू*प र्शनके संस्टेश परि-गमका बीरको बीटा है। तिसके करी कडुने करी मीडे पर केर २ पह की की इसके सेक्ने सक्त करता है, पत्तु बहुदर्द सहर भेम प्रदेशे र रहर हुए परें सुत कर बहुकि हेट हैं और कंडरलाई वरह निकास भारते रवित रास्त भवदी सुरस्य अनुतिरोसे नहीं पा अनुभवानन्द-के सक्ते बँचेत रह मन-अनग करता है। इन्य है कराय-विनयी दी अला तिनदी आलभूनिको कहारोंका देन हिमी भी तरह मदीन मही कर मका, जो जिल्ला अल्लानक मुख्या रमः पन करते हैं वे ही माहे भरित मुक्तेंने अनेन अनिद्राय, अधि नकी अनुभवानन्दक्षे भेद तुम रहते है











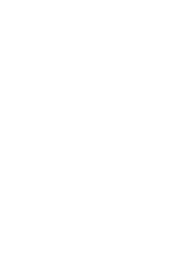




टेश्यामार्गणामें भवञ्चमण ।

(٩٢)

दिखापाय, निगदाण, निर्देष, निर्देश, निर्देश, निगदार, स्व मर्गी, मर्गार-अर्था न, मर्दे देप्तिन, अर्थाल,निरुग्ल-सन्दरार्थन, . सर्मार्च न विषय सम्बद्धे अनुसर्वा संबद्धी हम आप होती होते. रेलंदी प्रणीत्का भी है और सामाने माँच कार्न ही मगारि भीवरें हेर्न अनुगरियों का की है कि, यह अपने पाट-कर्तेको अन्यिय राष्ट्रद धरता कला बी अवद, अवही, विकास (अप) हमादिने सन्तर विहा है <mark>साहै । यह सक्त</mark> सोर्ट नक्ती रक्षा, रिवार राह्य बाहरूप कृष्टि स्टेंदे भागक करण हैं, होंदे गया गार्च होते. जायानमा बर्तिकारी अवश्विक है और मुझानमाई पहुंचा हारहते. in estate to fire the south only the भर्दे । गर्दे । १००६ भरते हात हर राजन्य स्मृत्देश्य क्षिती । कार है। बार परेनी कारण है को अधिकारी हैन मद्राद्वादे राष्ट्र श्रद्ध है हुई श्राह्म स्ट्री स्ट्र क्षा हो। विभाई कि शुक्र नेश्वणका करियाको । आगा एक करियों है । in the first of the state should be seen to the fifth end to the safet to a grade to be the transfer that the the rest of many them to have the first THE PARTY OF A PARTY RESERVED AND AND AND



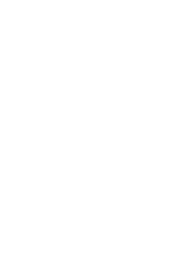
कुर्योमें कामप्र, परवर्धी तक होते हैं । परनु को मन्यवृद्धि होई-वे ही माधार् का मनेपक पर देखे हैं । के कींव स्वर्धा, भूकीलपी, सुबर्दवर्ण, ध्यारीण तथ माडु पुर्वेदी मंदिने स्व होते हैं, के लोक कालगाँकों ने इसन गानियोंके समान **रह**ने-ध्यान्य हे सुहत्राथ साधा रीती स्वीते १२ वें सर्व पर्वत रेंद्र होते हैं। सम्बन्धी इपाहाँ ने महमनेपदी निर्द्ध की नों है। हो हो। परपा ही दिस्स्टि मेर् हेंद्र हर थे नवालिये नवर स्थेप सम्बद्ध हैने हैं, है सेह र्तिता के हर् एकेंद्रे मोदे हर्दि स्टर सम्हे-प्राप्त है शुर्दे महिनाई महिनद हारे राग ६ ईसरे रण ने भई है जिसस सामनेहरा साह हैते हुए इस्टिंग्स बर्किक क्षेत्रे क्षाप्रदेश गर्दे क्षाप्रेस के क्षा المالية والإرامية في المالية والمنطقة المالية المالية المالية المالية المالية المالية المالية المالية المالية ियू करी असे अर्थित साही करी हा विवस्तानी कोंद्र को कारे दि कि है कि की की की की नरका राहा है **राह** अन्यस्टानेहरे का रहते हैं



न्य जीन स्थि सुलासावारी संस्थात्य ही है और देख भाषराद्री है सुधांद अरतारासात भाषा प्रतिमेवे निका भाषात पाना अन्यान वर्तन है। यदा दाद्ध भागी होनेदी चोग्यतः सानेदाना सर्देदी सद र्तेका प्रणाल गुर्स्स हो। जाना है र बार्च । सर्वे, समी प्रदान आगल भाविका परिमाण राष्ट्र । महिल विनामारे एवन प्रमाणसून है, करें दिनाया भारत अगरणार्ग कि है किने है। इस अगस प्राणने हता धरवरार्मगाहर समय राज्यन में इस बारेंग है। का के नहीं परोपे के एन न दाई या अनाय, विन्तु प्रसार्थकी की हुन्दें ने एवं अपूर्ण जातत है की सी हैं है है की 8ुक्प दिर्दे (के की) जरधार हुए ठा री की कि रहा की का को है और है के एक हो। में कलाई के कोई से अस्टाइट हैंड हार इत्य हुए असे पान साथ हर हा हो है। साहि साहि कार पर राज्य हुत दशर राजेच हरने रूप के राज्यसीत द १ मा र नरपर हो। १ भी अदान दर्हें



निचारा तुरत निघ्यादृष्टी होता है । यदि चारों योद्धाओंमेंसे किसीका दाव पढ़ गया तो सासादन अवस्थाने आ कमसे कम एक समय उत्कृष्ट छः आवर्धके बीचमें गिरता पडता निष्यास्वकी मुनिमें चल जाता है। यदि मिश्रमोहनीका वरा घर पडा तो वह उपशम सम्यकी दही गुड़के समान निटे हुए सम्पक्त निय्यान्त श्रद्धानमें अन्तर्मुहर्तके हिये आजाता है और यदि कुछ मंद्रवम पापके उद्यते सन्यक-मोहर्नाने ही पकड टिया तो सम्पक्ति मर्नथा न गिरकर निर्मटभावसे चटमट अगार रूप श्रद्धाभावमें आजाता है और वव अपना नाम संबोपराम सम्पर्की कहन्द्रता है तथा इस मानको अधिकक्षे अधिक ६६ सागर और जबन्य एक अंतमहूर्व तक नहीं छोड़ता है । सुद्ध-निधय-नय करके इस आत्माका सम्यक्दर्शन गुण सामाविक है। परन्त स्याहारनय करके यही दर्शन—गुण अनादि व मादि दर्शन—गोर्ट-नीके द्वारा मर्बधा आवर्णित ग्हनेमे मिय्यान्तके नममे कहळाडा है। इमी तरह इसी एक दर्शनगुराके ही नाम मामादन,मिश्र, उत्हाम, और क्षयोपदाम हो जाने हैं। और तब दिमी क्षयोपदाम मन्यद्योदी कर्म-भूमिने अध्यारीय होना मनुष्यभामें केवली व श्रुतकेवरीकी पा-. मक्र यक्ष प्रसारि प्रति होती है। तो वहीं उद्योग गुणा मनीनना म्बर र्रोड सम्बन इंटर रहे। बम्बसे बर्ट रोट अध्याद म्बनका समान गा है। अध्य है के एक हा गा प्राप्तके ममार्थे सामे जोती तम क्षा जाता । प्रमाण जा सके करण है। यह उस है उस समीव असिय हम यह हार्यन सभ्यत्तन अन्यामें नियन है। हम है। है कि



इस समर्राष्ट भारीको अपनी एकाव राष्ट्रिसे तथा नहीं सक्ते । नो निन स्यस्य परिणानकी अटल मुद्रशन मेरतन् अटिम घ्रदामें गीन हैं, इनको न पापतीकी मपदा और न अनेक उपमर्ग और पर्गपती-की मुगपर आपरा कभी विकास बनाती है। अनेक मेरासे हास गार्ट हो प्रधाना व अनेक हेवियों हाता की हुई निन्दा उनके हर पर्वत समान उपयोगके उपरमे नेपधारके समान क्रकर चर्न जाती है। वे साबु महान्या भव भय-ध्रमणकरी वर्मचनाचे भीतर पुनः होता हैतेन रामुस पहाँ है। इसे अन्यामें स्थय समीहन प्रमादः नित्य थमाः अनुषम् अमृतकी दर्श किया काता है। जिस क्षीने भारतको हरने हर मे भाग और अपने और बागाओं स्वच्छ भूति केल्ला केल ला भागायनकी, अनुगत्ते हुए सामी क धर्मभर्ग बहारी बड़ाड़े हैं, जिसके उत्तम शहायरी पालायों ने बीमड काईन्सराहर्स, वर्षेको देख अभिन्तुसाहरी, सरकी बहार है चित्रक सर् रिकेटर्यन मेर्डिट हो मचन प्रमाध मह दिनेत्रिके सर्वे, श्यम प्रीमानिक प्रवर्ध महीत सरमार देखा नामा समेहन कर रहे है। यह यह सावह बन है जाने नामार्थ we will ever in the extra the least the district of the en en la la greno de la laboration de constitue

Extra contract contract and contract

eas of a contract



भारते हुए हुआ कीनोंबे समते प्रचेक प्रदेशमें भीगा हुआ हुन्द्र अनुभृतिवियाचे रमपाने उत्मत्त होता हुआ अपने अपने निद्ध-शिल्हा म्यन रमना हुआ। धीतरागतादी मनेहर सरंगीमे उजनहा हुआ ऐसा हर्णयमान हो रहा है कि निसके हर्पके प्रकारको मध्यस आङ्गानका अध्यास तित्रको प्राप्त हो गया है तथा शिरामि श्राप शे अमुनर्स् हाइ गार ममय स्यंत्रन उनका राभ रे तथ इस्ता स्वाते ऐसे पुर हो रहा है कि हिससे हमाई आपारे अनुष्य देव्दंत प्रदुर्भत होता लाहा है और म पुरर्म अलाव अन्यको प्रत्र होत वत है। यदी या शाण गर्द ही हुद्ध और विद्व है स्थारि अपदि या सन्बन्ध करिर क्षाति जिल्ली अन्य है या है।इस अनुदर्श विश्वे ही जिल्ला ह्याई की नेहर्ने प्राप्त कार है निका आर्थ है और संबो कार क्या क्या क्यों में मोर का कार्षे । अवन्य एए अपन देशारित देशातके आहेर को है। परन हो। हार हेता हैए गई है, जिस्से पह आरा हाराप्पार्व हुए इश्हें र प्रशस्य की हमें बहात ता रक्षा अल्लाहा । एक हो रहा हुन **हर्न आहारद** ा प्रकार का अपने के स्वाप्त है हम्म And same and the second of ्र के १६ वें अस्त चिक्का है। इ.स.



र्मोर्स्त कारो राजित वर स्ता है। निवास कर्म प्रकार कराज हुए यह विद्यान अन्यवद्गीत क्षित सम्बद्ध स्थित अनुसाह हु-गाम बनुनी हानि हिंदीने पालाबी हरन साम बन्ता हटा भी शक्त भाष राजेंदी नित्र निता अरदान दर रहा है। है र्था सम्बद्ध समूत्र होता हम राशिक्षाम अपनी होंदेशी हत. हो। नवोधी में होड़ महरो दिए द्वारण है प हरिसीन रह ियुर्वेश करता सराम हत्ये परिषेत्र हो की की ग्राप्तकी र्थाः है, हो। स्टें रही स्वा माधनी ही एका सने रेंदे और मुद्देश स्मृदेश ने भी भागी होते हैं। विकासन १६ रहणाहर दि १० सम्बद्ध गरमा घोष गरी है. ही सब ene केंद्र हो हे स्परहें के ना है, कर जा कि किये के बारता भी है कर, एउटलर एट में देख है उसे उसावार हैं। इस इस्ते एई उन्हें आहा आहा का दें हैं। इस्ह عديد في والريد في وسيد هما في أن عند المستجد المسايد. ence he had a to themselves with the figure If here is a few many from their same of क्ला है। एक द्वार है अनुदो से वे कारण राला काल ANT - E-1 T T-M & TO TOTAL YE THAT AND IS इंडेबर्ट र है कहे उन्हर साथे देश कि है. Reality of the state of a section to be so the time of the former fine the test of the control of the contr



धनी मोहतमनाशक स्वपरप्रकाशक अनुभव कर रहा है। आत्मप-दार्थ यद्यपि अरूपी इन्द्रियोंसे अतीत है तया मनके भी अगोचर है, परन्तु जैसे कोई आम्रफळका स्वरूप परके द्वारा जान आमके गर्णोंका भछे प्रकार निश्चय कर जब उस आमके रसका स्वाद छेता है अथात जब अपने उपयोगको रसके साथ एकतारूप करता है तब उसकी विरुक्षण मिष्टताका अनुभव करता हुआ उसके रसमें मोह होनेके कारण साता मानता है। वसे ही यह वत्त्वज्ञानी प्रमाण नयाके द्वारा आत्माके स्वरूपको यथार्थ जान निध्यय करता है और तब अपने अमुर्तीक आत्माके उपयोगको इन्द्रिय-ग्राम और मन-मर्कटसे पृथ-कुकर परमञ्जूद्ध परम पारिणामिक भावके धनी कारण परमात्मामें नोड़ देता है। पुहर परमाणुओं के बंबमें नैसे दो गुण अधिक ग्रिग्वता व रूक्तना कारण है वैने ही इन अनुर्वीक शुद्ध भावोंके परम्पर बंचमें म्बस्तरूप उज्बलना कारण है । इस अपूर्व सम्बन्धके होनेंसे ही अनुभवकी करा कीटा कटाप करती है और जैसे चन्द्रकटा और नाउन कि मंदिर सर्वेग जरूर रामके उत्पन्न करना है वैसे ही तब भवमन्त्रे रहयमन तेत्र हुए उर्थे सालत् अर ग्रास्त-को ५ न ३ हरा परवडाचे चयेर छता है ते अ_रा क्रमस ेकिश सबसे किएला साम महीरह परन रहते हर अ**ले** भाग है। यह अनुसार है। है अपने अपने हैं है अनुभवानन्दर्भ वेटम हेल्ली है उन सबस्य बर्ग राह्न ज्या अकारे हैं देशे असा असा शें रेले हे हम *सामा* है तह दश्में में सुद्धा निध्यवस्थित थिए अनत रामान्या अमेरित्रया



